आपके पत्र

संपादक जी,

मैं आपकी पत्रिका का नियमित पाठक हूँ, जब से आपने यह पत्रिका प्रकाशित की है। तब से मैं नियमित रूप से आपकी यह पत्रिका पढ़ रहा हूँ। हिन्दी भाषी यह पत्रिका अपने आप में सचमुच एक अनोखी पत्रिका है,जो मधुमेह जैसी जटिल व अबूझ बीमारी के बारे में अच्छे–अच्छे लाभप्रद सुझाव व निदान के बारे में रोचक जानकारी सरल भाषा में प्रस्तुत करती है। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि यह मधुमेह वाणी पत्रिका लगातार पाठकों के बीच लोकप्रिय होगी एवं मधुमेह रोगियों के लिए वरदान साबित होगी।

माननीय संपादक महोदय जी आशा करूँगा कि भविष्य में और भी अच्छी से अच्छी सलाह, एवं सुझाव, सावधानी आदि प्रकाशित होती रहें एवं हम जैसे मधुमेही एवं सभी लोगों को इसकी जानकारी मिलती रहे।

– इन्दुकुमार भगत
113, अविनाश नगर,
फेस–2बरखेड़ा (भेल) भोपाल–म.प्र.

सपांदक जी,

मधुमेह वाणी निश्चित रूप से मधुमेह रोगी तथा सामान्य लोगों के लिए पूर्ण वैज्ञानिक पत्रिका है। इस पत्रिका के सम्पादन हेतु सम्पादक मण्डल, बधाई के पात्र हैं, मेरी सदस्यता यदि समाप्त हो रही हो तो कृपया सूचित करें जिससे पुनः सदस्यता शुल्क भेज सकूँ। मुफ्त ब्लड शुगर जाँच केन्द्र उ.प्र. मे केवल एक ही है जो कानपुर में है और शहर से दूर है।

– अनन्त राम
सेनावृत्ति पुस्तकालयाध्यक्ष
मोतीलाल नेहरू मेडिकल कालेज, इलाहबाद

Dear Dr. Jindal

Over three months back you were gracious enough to send me five copies of 'Madhumeha Vani'. I was overwhelmed to see the standard of the publication. The Magazine is the best I can imagine with excellent illustrations and very useful contents.

We used to publish a periodical 'Madhumeh Samikshya' some years back. It lasted some eight years and has ceased to appear since around 10 years. I am sure your superb effort would last much longer because of you and your hinter land.

Words indeed fail me to fully express my admiration. When some 7000 copies have to be published, I can visualise the size of the membership of your association and its followers. I earnestly pray for the upkeep of your unique effort. It is indeed beyond me to suggest any improvement. The price fo Rs. 20.00 appears appropriate. Does the price cover cost of publication? or it has to be subsidised by the organisation?

I felt elevated as you thought of sending me the copies. Unfortunately the way I meted out an apparently cold reception is sinking me into an abyss of embarassment and depression. This happend as the thereshold of my procastination was so high. It may not be possible to convince you of my real feelings of admiration and joy all these days and for times to come.

With my very best wishes.

Dr. Bibhuti Bhushan Tripathy
P.G. Professor of Medicine (Retd.)
'Saradiya,' Mission Road,
Buxi Bazar, Cuttack - 753001

संपादक जी

मधुमेह वाणी के सफल प्रकाशन के लिये बधाई स्वीकार करें। एक नीरस ले लगने वाले विषय में पत्रिका और और उसमें इतनी विविधता उड़ेल कर रख देना वास्तव में एक सराहनीय प्रयास है। धूम्रपान पर डॉ किशोर शेलगीकर का लेख ज्ञानवर्धक है। हमारी सरकारों की आर्थिक मजबूरियों के चलते तथा तंबाखू लाबी के धनबल के आगे देश में धूम्रपान के विरूद्ध संघर्ष उतना नहीं छिड़ पाता जितना उसकी आवश्यकता है। मैं एक कैंसर विशेषज्ञ हूँ और धूम्रपान के दुष्परिणामों को नित्य देखता रहता हूँ। मगर वो एक ऐसी स्थिति होती जब बहुमूल्य समय निकाल चुका होता हैं और करने को जो कुछ रह जाता है वो काफी खर्चीला होता। मेरी आप को सलाह है कि आप अपनी पत्रिका के माध्यम से तंबाकू एवं धूम्रपान के दुष्प्रभावों का निरंतर प्रचार करते रहें। मैं भी थोड़े समय में कैंसर विषय पर एक त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन करने जा रहा हूँ तथा उसमें मेरा मूल उद्देश्य कैंसर प्रिवेंशन होगा। आपसी सहयोग से हम इस बुराई के विरूद्ध एक प्रभावी जंग छेड़ सकते है। सहभागिता के लिये आपको खुले दिल से दावत देता हूँ।

डॉ. श्याम अग्रवाल, कैंसर विशेषज्ञ
नवोदय अस्पताल, भोपाल

आदरणीय डॉक्टर साहब,

मधुमेह वाणी की सामग्री बहुत सटीक और ज्ञानवर्धक है पर कुछ त्रुटियाँ बहुत अखरती हैं। जनवरी में कुद भूल रह गयी। इतनी अच्छी पत्रिका में ऐसी त्रुटियाँ शोभा नहीं देती।

– सचिन यादव, लखनऊ

प्रिय संपादक जी,

पहली बार आपकी पत्रिका ''मधुमेह वाणी'' पढ़ने का मौका मिला। मैं वर्षों से डायबिटिक हूँ परंतु मधुमेह पर इतना अच्छा साहित्य नहीं मिला। व्यंग्य, कविता और वैज्ञानिक जानकारी सभी कुछ इस पत्रिका में उपलब्ध है। मेरी शुभकामनाएँ। मुझे अपना स्थायी पाठक समझें, मैं वार्षिक शुल्क साथ ही भेज रहा हूँ। मैं भी हल्की–फुल्की कविताएँ लिखता हूँ, आशा है भविष्य में मुझे भी जगह देंगे।

–रमेशचन्द्र गुप्ता, गाजियाबाद